''ग्रामीण विकास के सन्दर्भ में स्वामी विवेकानंद की परिकल्पना''

स्नेह प्रताप सिंह

विवेकानंद के अनुसार विकास की अवधारणा का जो मतलब है भौतिक और मानव संसाधन विकास का एक सफलता पूर्ण गठबन्धन हैं स्वामी जी का मानव संसाधन विकास से अभिप्राय गाँव के लोगों के विकास से था। गांधी जी के अनुसार भी मानव संसाधन का विकास ग्रामीण विकास एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। उन्होंने कहा था कि हमारा गाँव बुद्धिमान इंसान पैदा करेगा। विवेकानंद एक धार्मिक भिक्षु थे लेकिन भौतिक विकास से उन्हें किसी प्रकार का परहेज नहीं था। उनका मानना था कि भौतिक विकास किया जाना चाहिए क्योंकि इससे सभी के विकास के लिए अवसर मिलेंगे और इस लिहाज से भौतिकवाद भारत को बचाने के लिए भागे आएगा। अर्थात् विवेकानंद जी का अभिप्राय था कि विकास, भौतिक विकास और मानव संसाधन दोनों क्षेत्रों में होना चाहिए। विकास के बारे में इनका एक और महत्वपूर्ण विचार रहा है कि संपत्ति का समान वितरण हो। समाज में जाति, रंग और काम के आधार पर भेद–भाव न किया जाय।